साधुश्रीपृथ्वीधरकारितजिनभुवनस्तवनम् ।।

– शी.

मध्ययुगमां भारतवर्षना, विशेषतः पश्चिम अने मध्य भारतमां थयेला, शूरवीर, दानवीर, सत्त्वशाली अने मुत्सद्दी जैन मन्त्रीओ थकी जैन संघ अने धर्म खूब ऊजळो छे. आ मन्त्रीओए जैनधर्म / संघनी सेवा तो करी ज, परन्तु तेथी अधिक तेमणे राष्ट्र, राज्य अने समग्र समाजनी दाखलारूप सेवा बजावी हती. तेओ धर्मे जैन होवाने कारणे तेमणे करेली आदर्श राष्ट्रसेवाने तथा राष्ट्रकक्षानां तेमनां कार्योने नजरंदाज न करी शकाय. आ मन्त्रीओमां गूर्जर राष्ट्रना मन्त्रीओ विमलशाह अने वस्तुपाल-तेजपाल जेम मुख्य छे, तेम मूळे गुजराती पण मण्डपदुर्ग-माण्डूना महामन्त्री साधु पृथ्वीधर एटले के पेथडशाहनुं नाम पण अग्रिम पंक्तिनुं गणी शकाय तेम छे.

आ मन्त्रीओ पोताना धर्ममां अडग अने परायण हता. धर्मना क्षेत्रे तेमणे जे कार्यो कर्यां ते कार्यो तेमज तेमनी उदारता अजोड ज रही छे. आम छतां तेमनी बे विशेषता नोंधपात्र छे : १. तेमणे पोतानां धर्मकार्योमां राज्यनी तिजोरीनो कदापि लेश पण उपयोग नथी कर्यो; जे पण खर्च धर्म माटे कर्युं ते बधुं, पोतानी हकनी, नीति अने न्यायथी तेमज कायदानुं पूरुं पालन करीने कमायेली सम्पत्तिमांथी ज कर्युं. २. राज्यना वहीवटमां, युद्ध आदि कृत्योमां तेमज समग्र प्रजाने लागु पडती तमाम बाबतोमां, तेमणे पोताना धर्मने के धार्मिक मान्यताओ के लागणीने कदापि आडे आववा नथी दीधी.

पेथडशाह तेमनी राज्यभक्ति, राज्य तथा राजा प्रत्येनी वफादारी तथा मुत्सद्दीवट माटे पंकायेला मन्त्री हता. न्याययुक्त राज्यवहीवट अने शत्रुओने बुद्धिबलथी वश के नाबूद करवानी कुनेहने कारणे तेओ राजा-प्रजाने प्रिय हता. तो ब्रह्मचर्यना विशद पालनथी ओपता सदाचार तेमज अजोड जिनभक्ति, संघनुं नेतृत्व, दान तेमज उदारता इत्यादिने कारणे तेओ प्रखर धार्मिक जन तरीके पण पंकाया हता.

पेथडशाहना काळमां अनेक स्थानोमां जैनो तथा ब्राह्मणो वच्चे वैमनस्य

प्रवर्ततुं होय तेवुं अनुमान थाय छे. आ कारणे घणां क्षेत्रोमां जैनोनो वसवाट होवा छतां जैन मन्दिरनुं निर्माण शक्य नहोतुं बनतुं. पेथडशाहे पोतानी उदारताथी व्यापक समाजने अनुकूळ कर्यो, अने हकारात्मक मुत्सद्दीवटथी राज्योना राजाओ तथा अमात्योने जीती लीधा. आना कारणे प्रतिकूल क्षेत्रोमां पण तेमने जैन देरासरना निर्माणनी अनुमति मळी अने तेमणे विविध स्थळोमां मन्दिरो बंधावी त्यां त्यांना जैनोने आश्वस्त पण कर्या, अने बे धर्मोना पारस्परिक विसंवाद-कोमवादने ठारी पण दीधो.

आवा आ पेथड मन्त्रीए केटलां देरासरो अने ते क्यां क्यां बंधायेलां, तेनी ऐतिहासिक नोंध आपतुं आ स्तोत्र अत्रे प्रगट थई रह्युं छे, जे वांचवाथी पेथडशाहनी अद्‌भुत क्षमतानो परिचय लाध्या विना नहि रहे. स्तोत्रना कर्ता अज्ञात छे. मित्र मुनिवर श्रीधुरन्धरविजयजीए विहार दरम्यान क्यांकथी प्राप्त पानांनी नकल मोकलेली, ते परथी आ सम्पादन करेल छे. ते पानुं १५मा सैकानुं होय तेवुं अनुमान छे. पेथडशाहनो समय १४मो शतक छे. 'सुकृत सागर' नामे तेमनुं जीवन-चरित्र (संस्कृत) प्रसिद्ध छे.

स्तवनना कर्ताए, योग्य रीते ज पेथडशाहने, सम्प्रति राजा, कुमारपाळ राजा अने वस्तुपालमन्त्रीना वारसदार के अनुगामी तरीके वर्णव्या छे. (श्लोक ४) प्रथम पांच श्लोकोमां कर्ताए पेथडशाहनां धर्मकृत्योनुं वर्णन करतां जे महत्त्वनी वातो नोंधी छे ते आ प्रमाणे छे :-

१. पेथडनुं खरुं नाम साधु पृथ्वीधर छे, (साधु → शाह, पृथ्वीधर → पेथड). २. तेना राजवीनुं नाम जयसिंह राजा छे. ३. तेणे अनेक पौषधशालाओ (जैन उपाश्रयो) निर्मावी हती. ४. पार्श्वनाथनी ते पूजा-उपासना करतो. ५. त्रिकाल जिनपूजा अने बे टंक श्रावकोचित आवश्यक क्रिया ते करतो. ६. पर्वदिवसे पौषध करतो. ७. साधुनी भक्ति करतो, अने साधर्मिक बन्धुनी खूब वैयावच्च-सेवा करतो.

७. सौथी अगत्यनो तेमज ऐतिहासिक गणाय तेवो उल्लेख अहीं ए मळे छे के - '**विद्युन्माली**' नामे देवे बनावेल, '**देवाधिदेव**' एवा नामे प्रख्यात, भगवान् महावीर (**ज्ञाततनूरुह**)नी प्रतिमानी ते पूजा करतो हतो.

सिन्धु-सौवीरदेशना राजा उदयन द्वारा पूजित 'जीवन्तस्वामी' तरीके निर्मित ते प्रतिमा 'वीतभयपत्तन'ना ध्वंस-समये जमीनमां दटाई हती. विक्रमना १२मा सैकामां, श्रीहेमचन्द्राचार्यना कहेवाथी, राजा कुमारपाले, ते प्रदेशमां उत्खनन करावीने ते प्रतिमा सम्प्राप्त करेली, अने ते तेने पाटण लई आव्यानो उल्लेख, 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित'ना दशमा पर्वमां उपलब्ध छे. परन्तु त्यार पछी ते प्रतिमानुं शुं थयुं तेनो संकेत मळतो नथी. प्रस्तुत स्तोत्रना बीजा पद्यमां ते विषे स्पष्ट निर्देश सांपडे छे, ते ऊपरथी अनुमान थई शके के ते प्रतिमा कोई पण प्रकारे बची गई के बचावी लेवामां आवी हशे; अने कालान्तरे ते मध्य प्रान्त-मालव देशमां पहोंची हशे, जे माण्डूना मन्त्री पेथडशाहना अखत्यारमां देखा दे छे. आ उल्लेख साचे ज इतिहासनो एक महत्त्वनो अंकोडो बनी रहे तेम छे.

८. छठ्ठा पद्यमां नोंधायेल संवत् १३२० वर्ष सुधीमां अथवा तो १३२० थी प्रारंभीने पेथडशाहे कया कया क्षेत्रमां कया कया जिनालयो कराव्यां, तेनी यादी अथवा तालिका आ प्रमाणे छे. स्तोत्रना ६ थी १५ - एटलां पद्योमां थयेल वर्णनने अनुसारे आ तालिका गोठवी छे :

१.	[१]मण्डपगिरि(मण्डपदुर्ग)	आदिनाथ चैत्य
२.	निम्बस्थूर-पर्वत	श्रीनेमिनाथ-चैत्य
		तेनी तलेटीमां पार्श्वनाथ-चैत्य
३.	उज्जयिनी	पार्श्वनाथ-चैत्य
४.	विक्रमपुर	नेमि-चैत्य
५.	मुकुटिका पुरी (महुडी ?)	पार्श्वनाथ तथा आदिनाथ (बे चैत्य)
६.	विन्धनपुर	मल्लिनाथ-चैत्य
७.	आशापुर	पार्श्व-चैत्य
८.	घोषकीपुर	आदिनाथ-चैत्य
९.	अर्यापुर	शान्तिनाथ-चैत्य

१. स्तोत्रकार मण्डपगिरिने शत्रुंजयसमान अने निम्बस्थूरपर्वतने उज्जयन्त-समान वर्णवे छे. अर्थात् ते बे पर्वत ऊपर क्रमशः शत्रुंजयावतार अने उज्जयन्तावतार चैत्यो मन्त्रीए बनाव्यां.

१०. धारानगर ११. वर्धनपुर	नेमिजिन-चैत्यो (बे)
१२,१३. चन्द्रकपुरी तथा जीरापुर	बे आदि-चैत्यो
१४, १५. जलपद्रपुर, डाहडपुर	बे पार्श्व-चैत्यो
१६. हंसलपुर	अरनाथ-चैत्य
१७. मान्धातृमूल	अजितनाथ-चैत्य
१८. धनमातृकापुर	आदि-चैत्य
१९. मङ्गलपुर	अभिनन्दन-चैत्य
२०. चिक्खलपुर	पार्श्व-चैत्य
२१. जयसिंहपुर	महावीर-चैत्य
२२. सिंहानक	नेमि-चैत्य
२३. सलक्षणपुर	पार्श्व-चैत्य
२४. इन्द्रीपुर	पार्श्व-चैत्य
२५. ताल्हणपुर	शान्ति-चैत्य
२६. हस्तिनापुर	अरनाथ-चैत्य
२७. करहेटक (करेडा)	पार्श्व-चैत्य
२८. नलपुर दुर्ग (के नलपुर अने दुर्ग ?)	नेमि-चैत्य
२९. विहारक, ३०. लम्बकर्णीपुर	वीर-चैत्यो(बे)
३१. संखोड (संखेडा ?)	कुन्थुनाथ-चैत्य
३२. चित्रकूटपर्वत (चित्तोडगढ)	ऋषभ-चैत्य
३३. पर्णविहारपुर	आदि-चैत्य
३४. डण्डानक	पार्श्व-चैत्य
३५. वंकी (वांकी?, वांकली?)	आदि-चैत्य
३६. नीलकपुर	अजित-चैत्य
३७. नागपुर (नागोर)	आदि-चैत्य
३८. मध्यकपुर	पार्श्व-चैत्य
३९. दर्भावतिकापुर (डभोई)	चन्द्रप्रभ-चैत्य
४०. नागद्रह (नागदा)	नमि-चैत्य

४१. धवलक्कनगर (धोळका)	मल्लि-चैत्य
४२. जीर्णदुर्ग (जूनागढ)	पार्श्व-चैत्यो (बे)
४३. सोमेश्वरपत्तन (सोमनाथ-प्रभास)	
४४. शङ्खपुर	मुनिसुव्रत-चैत्य, साथे वीरप्रभु.
४५. सौवर्त्तक	नेमि-चैत्यो (बे)
४६. वामनस्थली (वणथली-वंथली)	
४७. नासिक्यपुर(नासिक)	चन्द्रप्रभ-चैत्य
४८,४९. सोपारकपुर, रुणनगर,	पार्श्व-चैत्यो (चार)
५०,५१. घोरंगल, प्रतिष्ठान	
५२. सेतुबन्ध	नेमि-चैत्य
५३,५४,५५,५६,५७,५८. वठपद्र (वडोदरा) नागलपुर, टक्कारवा (टंकारा?), जालन्धर (जलंधर?), देवपालपुर, देवगिरि	सर्वत्र वीर-चैत्य (६)
५९. चारूप	शान्ति-चैत्य
६०. द्रोणत	नेमि-चैत्यो (२)
६१. रत्नपुर	
६२. अर्बुकपुर	अजित-चैत्य
६३. कोरण्टक (कोरटा)	मल्लि-चैत्य
६४. ढोरसमुद्र-प्रदेशे सरस्वती पत्तन	पार्श्व-चैत्य
६५. शत्रुञ्जय(पर्वत)	शान्ति-चैत्य
६६. तारापुर	आदि-चैत्य
६७. वर्धमानपुर (वढवाण?)	मुनिसुव्रत-चैत्य
६८,६९. वटपद्र, गोगपुर	आदि-चैत्यो (बे)
७०. पिच्छन	चन्द्रप्रभ-चैत्य
७१. ङ्कारपुर	जिनगृह
७२. मान्धातृ	?
७३. विक्कन	नेमि-चैत्य
७४. चोकलपुर	आदि-चैत्य

आ यादीमां घणां स्थानोनी साम्प्रत ओळख पामवी हजी बाकी रहे छे. परन्तु क्षेत्र-नामो जोतां पेथडशाहे केटकेटला प्रदेशो के राज्योमां पोतानो धर्म-व्याप विकसाव्यो हशे ते जाणी शकाय छे.

तेमना बनावेलां जिनमन्दिरोनी ज फक्त आ यादी छे. ते सिवाय तेमणे पौषधशालाओ, सदाव्रतो, जैन सिवायनां देव-मन्दिरो, जलाशयो, धर्मशालाओ इत्यादिनां जे निर्माण करावेलां, तेनी यादी पण कांई नानी नथी. तेमनुं विस्तृत चरित्र वांचवाथी ज तेनो ख्याल आवी शके.

साधुश्रीपृथ्वीधरकारित जिनभुवनस्तवनम् ॥

श्रीपृथ्वीधरसाधुना सुविधिना दीनादिषूद्दानिना
भक्त**श्रीजयसिंहभूमिपति**ना स्वौचित्यसत्यापिना ।
अर्हद्भक्तिपुषा गुरुक्रमजुषा मिथ्यामनीषामुषा
सच्छीलादिपवित्रितात्मजनुषा प्रायः प्रणश्य हृषा ॥१॥
नैकाः पोषधशालिकाः सुविपुला निर्मापयित्रा सता
मन्त्र-स्तोत्रविदीर्णलिङ्गविवृत**श्रीपार्श्व**पूजायुजा ।
विद्युन्मालिसुपर्वनिर्मितलस**द्देवाधिदेवाह्वय-**
ख्यातज्ञाततनूरुहप्रतिकृतिस्फूर्जत्सपर्यासृजा ॥२॥
त्रिःकाले जिनराजपूजनविधिं नित्यं द्विरावश्यकं
साधौ धार्मिकमात्रकेऽपि महतीं भक्तिं विरक्तिं भवे ।
तन्वानेन सुपर्वपौषधवता साधर्मिकाणां सदा
वैयावृत्त्यविधायिना विदधता वात्सल्यमुच्चैर्मुदा ॥३॥
श्रीम**त्सम्प्रतिपार्थिव**स्य चरितं श्रीम**त्कुमारक्षमा-**
पालस्याऽथ च **वस्तुपालसचिवा**धीशस्य पुण्याम्बुधेः ।
स्मार(रं)स्मारमुदारसम्मदसुधासिन्धूर्मिषून्मज्जता
श्रेयःकाननसेचनस्फुरदुरुप्रावृट्भवाम्भोमुचा ॥४॥
सम्यग्न्यायसमर्जितोर्जितधनैः सुस्थानसंस्थापितै-
र्ये ये यत्र गिरौ तथा पुरवरे ग्रामेऽथवा यत्र ये ।

प्रासादा नयनप्रसादजनका निर्मापिताः शर्मदा-
स्तेषु श्रीजिननायकानभिधया सार्द्धं स्तुवे श्रद्धया ॥५॥
पञ्चभिः कुलकम् ॥

श्रीमद्विक्रमतस्त्रयोदशशतेष्वब्देष्वतीतेष्वहो !
विंशत्यभ्यधिकेषु **मण्डपगिरौ शत्रुञ्जयभ्रातरि** ।
श्रीमा**नादिजिनः शिवाङ्गजजिनः श्रीउज्जयन्तायिते**
निम्बस्थूरनगेऽथ **तत्तलभुवि श्रीपार्श्वनाथः** श्रिये ॥६॥
जीया**दुज्जयिनीपुरे फणिशिराः श्रीविक्रमाख्ये पुरे**
श्रीमा**न्नेमिजिनो** जिनौ **मुकुटिकापुर्यां** च **पार्श्वादिमौ** ।
मल्लिः शल्यहरोऽस्तु **विन्धनपुरे पार्श्वस्तथाऽऽशापुरे**
नाभेयो बत **घोषकीपुरवरे शान्तिर्जिनोऽर्यापुरे** ॥७॥
श्रीधारानगरेऽथ **वर्द्धनपुरे श्रीनेमिनाथः** पृथक्
श्रीनाभेयजिनोऽथ **चन्द्रकपुरी**स्थाने **सजीरापुरे**
श्रीपार्श्वो जलपद्र-**डाहडपुर**स्थानद्वये सम्पदं
देयाद् वोऽरजिनश्च **हंसलपुरे मान्धातृमूलेऽजितः** ॥८॥
आदीशो धनमातृकाभिध**पुरे श्रीमङ्गलाद्ये पुरे**
तुर्यस्तीर्थकरोऽथ **चिक्खलपुरे श्रीपार्श्वनाथः** श्रिये ।
श्रीवीरो जयसिंहसंज्ञित**पुरे नेमिस्तु सिंहानके**
श्रीवामेयजिनः सलक्षणपुरे पार्श्वस्तथेन्द्रीपुरे ॥९॥
शान्त्यै **शान्तिजिनो**ऽस्तु **ताल्हणपुरे**ऽरो **हस्तिनाद्ये पुरे**
श्रीपार्श्वः करहेटके नलपुरे दुर्गे च नेमीश्वरः ।
श्रीवीरोऽथ **विहारके स** च पुनः **श्रीलम्बकर्णीपुरे**
संखोडे किल **कुन्थुनाथ ऋषभः श्रीचित्रकूटाचले** ॥१०॥
आद्यः पर्णविहारनामनि **पुरे पार्श्वश्च डण्डानके**
वंक्यामादिजिनोऽथ **नीलकपुरे** जीयाद् **द्वितीयोः जिनः** ।
आद्यो नागपुरेऽथ **मध्यकपुरे श्रीअश्वसेना**त्मजः ।
श्रीदर्भावतिकापुरेऽष्टमजिनो नागद्रहे श्रीनमिः ॥११॥

श्रीमल्लिर्धवलक्कनामनगरे **श्रीजीर्णदुर्गान्तरे**
श्रीसोमेश्वरपत्तने च **फणभृल्लक्ष्मा** जिनो नन्दतात् ॥
विंशः शङ्खपुरे जिनः **सचरमः सौवर्त्तके वामन-**
स्थल्यां नेमिजिनः शशिप्रभजिनो नासिक्यनाम्न्यां **पुरि** ॥१२॥
श्रीसोपारपुरेऽथ **रूणनगरे घोरंगले**ऽथ **प्रति-**
ष्ठाने पार्श्वजिनः शिवात्मजजिनः श्रीसेतुबन्धे श्रिये ।
श्रीवीरो वठपद्र-नागलपुरे षट्क्कारकायां तथा
श्रीजालन्धर-देवपालपुरयोः श्रीदेवपूर्वे गिरौ ॥१३॥
चारूपे मृगलाञ्छनो जिनपति**र्नेमिः** श्रये **द्रोणते**
नेमी रत्नपुरेऽजितोऽर्बुकपुरे मल्लिश्च कोरण्टके
पार्श्वो ढोरसमुद्रनीवृति सरस्वत्याह्वये पत्तने
कोटाकोटिजिनेन्द्रमण्डपयुते शान्तिश्च शत्रुञ्जये ॥१४॥
श्रीतारापुर-वर्द्धमानपुरयोः श्रीनाभिभू-सुव्रतौ
नाभेयो जिन(?) **वटपद्र-गोगपुरयोः** श्रीनाभि(?)**श्चन्द्रप्रभः पिच्छने ।**
ङ्कारेऽद्भुततोरणं जिनगृहं **मान्धातरि** त्रिक्षदां (?)
नेमिर्विक्कननाम्नि **चोलकपुरे श्रीनाभिभू**र्भूतये ॥१५॥
इत्थं **पृथ्वीधरे**ण प्रतिगिरि-नगर-ग्राम-सीमं जिनाना-
मुच्चैश्चैत्येषु विष्वग् हिमगिरिशिखरैः स्पर्द्धमानेषु यानि ।
बिम्बानि स्थापितानि क्षितियुवतिशिरःशेखराण्येष वन्दे
तान्यप्यन्यानि यानि त्रिदश-नरवरैः कारिताकारितानि ॥१६॥

श्रीपृथ्वीधरकारितजिनभुवनस्तवनम् ॥